बाइबिल के माध्यम से आत्मिक फलदायिता की समझ

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम में आप सभी को नमस्कार।
आज हम एक शक्तिशाली आत्मिक सच्चाई पर मनन करेंगे: हर मसीही एक जैसा नहीं होता।
जैसे अलग-अलग प्रकार के फलदार पेड़ होते हैं, वैसे ही मसीही विश्वासी भी भिन्न होते हैं।
यीशु और भविष्यद्वक्ताओं ने बार-बार ऐसे चित्रों का उपयोग किया है जिससे हम समझ सकें कि परमेश्वर हमारी आत्मिक वृद्धि और हमारे हृदय की दशा को कैसे देखता है।

बाइबल के अनुसार मसीही तीन मुख्य श्रेणियों में आते हैं:

- वे जो अच्छी आत्मिक फल लाते हैं
- वे जो कोई फल नहीं लाते
- वे जो कटीली, बुरी (जंगली) फल लाते हैं

---

1. वे मसीही जो अच्छी आत्मिक फल लाते हैं

ये वे सच्चे और परिपक्व विश्वासी हैं जो परमेश्वर के वचन को ग्रहण करते हैं, पालन करते हैं और उसमें फल लाते हैं। यीशु ने इसे बोने वाले के दृष्टांत में इस प्रकार बताया:

> मत्ती *13:8 (*हिंदी ओवी*):*
> “कुछ बीज अच्छे भूमि पर गिरे और सौ गुना, साठ गुना, तीस गुना फल लाए। ”

> लूका *8:15 (*एनआरएसवी*):*
> “अच्छी भूमि पर गिरे हुए वे हैं, जो वचन को सुनकर ईमानदारी और भले मन से ग्रहण करते हैं और धैर्य से फल लाते हैं। ”

ऐसे विश्वासी परीक्षाओं में स्थिर रहते हैं, आत्मा द्वारा संचालित होते हैं (रोमियों 8:14), अनुग्रह में बढ़ते हैं (2 पतरस 3:18), और आत्मा के फल (गलातियों 5:22–23) उत्पन्न करते हैं।

> यूहन्ना *15:2 (*हिंदी ओवी*):*
> “जो डाली मुझ में रहकर फल नहीं लाती, वह उसे काट डालता है*;* और

> जो फल लाती है , उसे वह छाँटता है ताकि और अधिक फल लाए। ”

---

2. वे मसीही जो कोई फल नहीं लाते

इस वर्ग में वे हैं जो मसीह को स्वीकार तो करते हैं , परंतु आत्मिक रूप से ठहरे रहते हैं।
वे चर्च में जाते हैं , उपदेश सुनते हैं , लेकिन जीवन में कोई आत्मिक परिवर्तन नहीं दिखाई देता।

यीशु ने इस स्थिति को इस दृष्टांत में समझाया :

> लूका *13:6–9* (हिंदी ओवी *):*
> “किसी के दाख की बारी में एक अंजीर का पेड़ था *...* वह उसमें फल ढूँढ़ता रहा पर न पाया। उसने कहा , ‘तीन साल से मैं इसमें फल ढूँढ़ रहा हूँ और कुछ नहीं मिला — इसे काट दो *!’”*

ये लोग लाओदीकिया की कलीसिया जैसे हैं — न गर्म , न ठंडे।

> प्रकाशितवाक्य *3:15–16* (एनआरएसवी *):*

> “मैं तेरे कामों को जानता हूँ : तू न तो ठंडा है और न गर्म ...
> इस कारण मैं तुझे अपने मुँह से उगल दूँगा। ”

परमेश्वर दयालु है और मन फिराने के लिए समय देता है ,
लेकिन यदि कोई प्रत्युत्तर नहीं होता , तो न्याय आता है।

> इब्रानियों *10:26–27 (*हिंदी ओवी *):*
> “यदि हम जान -बूझकर पाप करते रहें , तो बलिदान शेष नहीं रहता ,
> केवल न्याय का भयानक भय। ”

इन विश्वासियों को आत्मिक रूप से जागना चाहिए :

> रोमियों *13:11 (*हिंदी ओवी *):*
> “अब वह घड़ी आ गई है कि तुम नींद से जागो। ”

> याकूब *2:17 (*हिंदी ओवी *):*
> “वैसे ही विश्वास भी , यदि उसके साथ कर्म न हो , तो अपने आप में
> मरा हुआ है। ”

3. वे मसीही जो जंगली (बुरी) फल लाते हैं

यह सबसे गंभीर और खतरनाक स्थिति है।
ये वे लोग हैं जो मसीही कहलाते तो हैं , लेकिन उनका जीवन पाप और अविश्वास से भरा होता है।
शायद उन्होंने कभी विश्वास किया हो , लेकिन अब वे परमेश्वर के वचन के प्रतिकूल जीवन जीते हैं।

> यशायाह *5:2, 4* (हिंदी ओवी *):*
> “उसने सोचा कि वह उत्तम अंगूर लाएगा , परंतु उसने निकम्मे अंगूर ही उपजाए *...*
> क्या और कुछ बाकी था , जो मैं अपने दाखबारी के लिए करता और नहीं किया *?”*

वे उद्धार की बातें करते हैं , लेकिन जीवन में व्यभिचार , झूठ , धोखा , चुगली , और पाखंड भरे हैं।

> गलातियों *5:19–21* (हिंदी ओवी *):*
> “शरीर के काम स्पष्ट हैं *:* व्यभिचार , अशुद्धता , वासनाएं *...*

> ईर्ष्या , मदिरापान ... मैं पहले ही कह चुका हूँ कि जो ऐसे काम करते हैं वे परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे। ”

यीशु ने कहा कि ऐसे लोगों को उनके फलों से पहचाना जाएगा :

> मत्ती *7:16-19* (एनआरएसवी *):*
> “तुम उन्हें उनके फलों से पहचान लोगे ... जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता , वह काटा और आग में डाला जाता है। ”

यह स्थिति अत्यंत खतरनाक है।

> यूहन्ना *15:6* (हिंदी ओवी *):*
> “जो मुझ में नहीं रहता , वह उस डाली की तरह फेंक दिया जाता है और सूख जाता है ; फिर उसे इकट्ठा करके आग में जला देते हैं। ”

अपना स्वयं मूल्यांकन करें

> *2 कुरिन्थियों 13:5 (हिंदी ओवी):*
> “अपने आप को परखो कि तुम विश्वास में हो या नहीं; अपने आप की परीक्षा करो।”

क्या आप आत्मिक फल ला रहे हैं?
क्या आपका जीवन मसीह की प्रतिध्वनि है या केवल एक नामधारी विश्वास?

परमेश्वर हर जीवन का एक दिन निरीक्षण करेगा।
वह चाहता है कि हम फलदायी और विश्वासयोग्य बनें।

पश्चाताप और नवीकरण का बुलावा

यदि आप पाते हैं कि आपका जीवन निष्फल या भ्रष्ट हो गया है, तो अभी भी आशा है।
परमेश्वर आपको अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा पश्चाताप और नवीनीकरण के लिए बुला रहा है।

> *प्रेरितों के काम 3:19 (हिंदी ओवी):*
> “इसलिए मन फिराओ और परमेश्वर की ओर लौट आओ, कि तुम्हारे पाप मिटा दिए जाएँ,

> और प्रभु की ओर से विश्रांति का समय आए। ”

आज एक ठोस निर्णय लें कि आप मसीह का पूरा अनुसरण करेंगे।
प्रार्थना , वचन, और सेवा में लग जाएं।
तब पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से आप ऐसे फल लाएंगे जो परमेश्वर को महिमा दें और दूसरों को आशीषित करें।

परमेश्वर आपको आशीष दे और मसीह में एक फलदायी जीवन जीने की सामर्थ्य दे। आमीन।

Share on:
WhatsApp

Print this post